सारांश

कृष्ण और सुदामा के बीच मित्रता की कहानी लोकप्रिय है । वे साथ-साथ पढ़ते थे । कृष्ण अमीर था सुदामा अत्यंत ही गरीब । कृष्ण द्वारिका का राजा बन गया गरीब बना रहा । अक्सर उसकी पत्नी और बच्चों को बिना के ही सो जाना पड़ता था । एक दिन उसकी पत्नी ने उसे मित्र से भेंट कर मदद माँगने को भेजा ।

गरीब सुदामा का कृष्ण ने गर्मजोशी से स्वागत सुदामा अपनी पत्नी द्वारा कृष्ण को भेंटस्वरूप भेजे गए चावल को संकोचवश छुपा रहे थे । पर कृष्ण ने छीन चावल बड़े प्रेम से अपनी पत्नी संग खा लिया । महल ने सुदामा की बड़ी आवभगत की और स्वयं खास ख्याल संकोचवश सुदामा कृष्ण से मदद न मांग पाया और जैसा था वैसा ही गरीब बन वापस लौट आया । जब वह अपने वापस आया तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर एक महल और अपने परिवार को महँगे-उत्तम वस्त्रों में देख उसे बड़ा हुआ । उसे भान हो गया कि यह सब कृष्ण की मदद है । मित्र के प्रति कृतज्ञता महसूस करने लगा ।